Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 3 | SPECIAL ISSUE MARCH-2023

कोविड–19 का शिक्षा पर प्रभाव

डॉ. मधु चाहान | व्याख्याता, शाह गोवर्धनलाल काबरा शिक्षक महाविद्यालय जोधपुर (राज.)

ABSTRACT:

कोरोना के दौर में शिक्षण गतिविधियों पर एक तरह से विराम लग गया था परन्तु ऑनलाइन शिक्षण ने नए रास्ते खोले। परिणामस्वरूप शिक्षा अब तेजी से ई–शिक्षा व ऑनलाइन शिक्षा की आरे अग्रसर होती जा रही है। ऑनलाइन शिक्षा में अपने स्थान पर इटं रनेट द्वारा विभिन्न एप (व्हाट्सअप, गूगल मीट, जूम विडियो इत्यादि) के द्वारा देश–विदेश के किसी भी कोने से विद्यार्थी पढ़ सकते हैं। ऑनलाइन शिक्षा ने लॉकडाउन में चल रही इस मुश्किल को आसान बना दिया है।

KEYWORDS:

महामारी, डिजिटल, स्मार्ट बोर्ड, स्लाइड, प्रोजक्े टर, कम्प्यूटर, परिदृश्य।

1. प्रस्तावना –

फरवरी 2020 से लेकर आज तक सम्पूर्ण विश्व 'कोविड–19' महामारी से जूझ रहा है। इस महामारी के प्रकोप से विश्व में लॉकडाउन के साथ आर्थिक, औद्योगिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, राजनैतिक, धार्मिक व अन्य सभी प्रक्रियाएँ रूक गई है। इस महामारी से बचने के लिए मुँह पर मास्क लगाना, सामाजिक दूरी बनाये रखना, बार–बार हाथ धोना, सैनिटाइज का प्रयोग करना आवश्यक है। देश मे कई क्षेत्रों में अनलॉक की प्रक्रिया शुरू हुई परन्तु विद्यालय एवं शिक्षण सस्थानों को दो वर्ष तक खोलने की अनुमति नही मिली। अतः विद्यार्थियों की विद्यालयी शिक्षा को निर्बाध रूप से चलाने के लिए सरकारों एवं विद्यालयों द्वारा बच्चों की औपचारिक शिक्षा निरंतर जारी रखने के लिए विभिन्न डिजिटल माध्यमों से ऑनलाइन कक्षा का विकल्प अपनाया गया। परन्तु इससे विद्यालयों, कॉलेजो, विश्वविद्यालयों की शिक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

21वीं सदी के दूसरे दशक में पठन–पाठन का समूचा परिदृश्य बदल चुका है। आज की शिक्षा नवयुगीन साधनों तथा युक्तियों से सुसज्जित होती जा रही है। साधारण ब्लैक बोर्ड की जगह स्मार्ट बोर्ड ने ले ली है। चॉक के स्थान पर मार्कर पने का उपयोग हो रहा है। स्लाइड, एल.सी.डी, प्रोजेक्टर, कम्प्यूटर अब प्रत्येक कक्षा की अनिवार्य आवश्यकता बनते जा रहे हैं। शिक्षा प्रणाली के तौर–तरीकों में तेजी से बदलाव हो रहा है तथा कोविड–19 के बाद से यह गति और भी तीव्र होती जा रही है।

2. कोविड–19 महामारी का परिचय व विवरण –

कोविड–19 महामारी को 'विश्व स्वास्थ्य सगं ठन' द्वारा महामारी घोषित किया गया है। यह एक वायरस के द्वारा जनित संक्रमण है जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में बहुत तीव्रता से फैलता है। यह वायरस दिसम्बर, 2019 मे सबसे पहले चीन में सामने आया था तब से यह बड़ी तेजी स दूसरे देशो में भी पहुंच गया। भारत में इसकी पुष्टि मार्च, 2020 में हुई।

लक्षण –

यह सक्रं मण सामान्य सर्दी–जुकाम या निमोनिया जैसा होता है। इस वायरस के सक्रं मण के बाद बुखार, जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना, गले में खराश जैसी समस्याएँ होती है।

बचाव के उपाय –

बचाव के लिए निम्नलिखित उपाय सुझाये गये हैं –

- सोशल डिस्टेंसिग बनाए रखना
- हाथों को बार–बार साबुन से धोना
- सफाई का पूरा ध्यान रखना
- मास्क का उपयोग करना
- सैनिटाइजर का उपयोग करना
- भीड़–भाड़ वाली जगहों पर न जाना
- हाथ मिलाने की जगह दूर से ही नमस्ते करना
- आँख व चेहरे को बार–बार नहीं छूना
- छींकते व खांसते समय नाक व मुँह को रूमाल से ढकना
- गुनगुना पानी पीना
- अपना इम्यून सिस्टम मजबूत बनाना
- डाइट में पौष्टिक चीजों को शामिल करना
- दिन में एक बार हल्दी दूध का सेवन करना
- अपने शरीर के तापमान और श्वसन लक्षणों की नियमित रूप से जांच करना कोरोना वायरस से बचने के लिए हम सबकी जिम्मेदारी बनती है कि हम नियमों का का कड़ाई से पालन करें ताकि देश को रोग मुक्त कर सके।

3. लॉकडाउन की स्थिति में बच्चों की पढ़ाई–लिखाई –

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और कारोना महामारी भी यही परिवर्तन लेकर आया है। इसकी वजह से लोग शारीरिक दूरी बनाकर अपने–अपने घरों में रहकर बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई करवाने के लिए विवश हो गए। इस तकनीक ने शिक्षण कार्य को आसान कर दिया क्योकि बच्चों को शिक्षा से अधिक दिनों तक दूर नहीं किया जा सकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए सभी विद्यालयों ने ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से बच्चों को पढ़ाना शुरू किया। ऑनलाइन शिक्षा का माध्यम काफी हद तक सफल भी रहा है। कुल मिलाकर ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से लॉकडाउन में भी बच्चों की पढ़ाई का होने वाला नुकसान बचाया गया।

4. लॉकडाउन के कारण बच्चों पर होने वाले प्रभाव –

कोविड–19 महामारी के कारण सामाजिक आवागमन और सामाजिक कार्यकलापों पर लगे प्रतिबधं एवं घर में अनुकूल माहौल बनाने के लिए वयस्कों पर पूर्ण निर्भरता के कारण बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित हुआ है। बच्चों पर होने वाले प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित हैः–

बच्चों में तनाव, अवसाद, दुश्चिंता –

अधिकाशं विद्यार्थी लॉकडाउन की अवधि के दौरान चिंता और तनाव का सामना कर रहे हैं। विद्यार्थी अपने शैक्षणिक प्रभावों के बारे में चिंतित है। सरकारों व शिक्षण सस्ं थानों के विभिन्न प्रयासों के बावजूद विद्यार्थी और माता–पिता भविष्य को लेकर आश्वस्त नहीं हो पा रहे हैं।

पढ़ने के लिए प्रेरित करते रहने की आवश्यकता –

लॉकडाउन की स्थिति में बच्चों के लिए अकेले बैठकर पढ़ना नीरस हो गया है। बच्चे हमेशा अपने शिक्षक और सहपाठियों से प्रेरित होते हैं। बच्चे व्यस्त हो गए परन्तु माता–पिता व अभिभावकों के समक्ष उन्हें पढ़ने को रूचिकर बनाने की प्रेरणा देना एक मुश्किल कार्य बन गया।

माता–पिता की दुविधा –

बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई में मदद करने में वे माता–पिता ही सक्षम है जो स्वयं शिक्षित हैं परन्तु अशिक्षित या कम पढ़े–लिखे बहुत से अभिभावक एसे हैं जिनके समक्ष अपने बच्चों की मदद करना एक चुनौती से कम नहीं है।

पढ़ाई–लिखाई के अतिरिक्त अन्य कार्यों के लिए अवसर –

जिस प्रकार विद्यालय में सह–संज्ञानात्मक गतिविधियाँ होती है, वैसे ही घर पर भी बहुत सारी गतिविधियों के लिए अवसर निकाले जा सकते हैं। घर के कार्यों में सहभागिता प्रदान करने से बच्चों में विशेष कौशल विकसित होने के साथ कार्य के प्रति सम्मान की भावना भी जागृत होती है।

विद्यालय के लिए अभिलाषी बच्चे –

लॉकडाउन व अव्यवस्थित जीवनशैली के कारण बच्चे विद्यालय को बहुत याद करते हैं। विद्यार्थी अपने मित्रों, स्कूल की घटनाओं व क्रिया–कलापों को बहुत याद करते हैं।

शारीरिक परिवर्तन –

लगातार एक जगह बने रहना बच्चों के लिए असहजता की स्थिति उत्पन्न करता है। बच्चों के कुछ विशेष व्यवहार लॉकडाउन की स्थिति में देखने को मिल रहे हैं जैसे – मोटापा, चिड़चिड़ापन, झुंझलाहट, जिद, बात न मानना आदि।

लम्बे समय तक स्क्रीन का उपयोग –

ऑनलाइन शिक्षण में बहुत सारा गृहकार्य देकर बच्चों को व्यस्त रखने का उपक्रम चल रहा है जिससे पढ़ाई के अलावा गृहकार्य के लिए भी बच्चों को स्क्रीन पर रहना पड़ता है। एसे में बच्चों का तनावग्रस्त होना, दुश्चिं ता बढ़ाना, अवसादग्रस्त होना, आँखों की समस्या होना स्वाभाविक ही है।

बच्चों का डिजिटल दुनिया की ओर आकर्षण –

ऑनलाइन शिक्षा में व्यस्त रहने की आवश्यकता अब बच्चों की एक दैनिक आदत बन गई है। स्क्रीन व इटं रनेट ने उनके हर कार्य को सरल बना दिया है जिसके कारण बच्चों में किताब पढ़ने व लिखावट सबंधी कार्यों में अरूचि उत्पन्न होने लगी है। उनका आकर्षण मोबाइल, कम्प्यूटर, लैपटॉप अन्य संचार साधनों की ओर बढ़ता जा रहा है।

5. लॉकडाउन के कारण शिक्षकों पर प्रभाव –

लॉकडाउन के कारण शिक्षकों पर निम्न प्रभाव पड़े हैं :–

विद्यार्थियों के सीखने का भय –

ऑनलाइन शिक्षण के दौरान शिक्षक अपने छात्रों से दूर रहता है। वह केवल उन्हें स्क्रीन पर देख सकता है परन्तु स्क्रीन के पीछे विद्यार्थी क्या कर रहे हैं, कितना सीखते हैं, इस बात को लेकर सभी शिक्षक विद्यार्थियों के सीखने के स्तर को लेकर भयभीत हैं। शिक्षकों को विद्यार्थियों से अपेक्षित समर्थन प्राप्त नहीं हो पाता है।

अनिश्चितता की स्थिति –

लॉकडाउन के अप्रत्याशित दौर की स्थिति के बारे में शिक्षक पर्णू रूप स अंजान हैं। सबकुछ इनता जल्दी और तेजी से हुआ कि उन्हें पाठ्यक्रम की कमी, पाठ्यक्रम में बदलाव, आवश्यक अधिगम प्रतिफलों आदि के बारे में समझने का अवसर ही नहीं मिला। ऑनलाइन शिक्षण कितने दिन चलेगा, यह अनिश्चितता की स्थिति शिक्षकों के लिए कष्टपर्ण ही थी।

तकनीकी ज्ञान सीखने की आवश्यकता –

ऑनलाइन शिक्षण की समस्याओं में पाया गया कि ऑनलाइन कक्षाएँ लेना शिक्षकों के लिए सुविधाजनक नहीं था। अनुभवी शिक्षकों को भी उपकरण और प्रौद्योगिकी का ज्ञान आवश्यक हो गया। इस तकनीक में जो शिक्षण सामग्री उपयोग में लेनी चाहिए, उसका वास्तव में उपयोग हो नहीं हो पाता। शिक्षकों का ध्यान उपकरण सचं ालन में अधिक रहता है।

ऑनलाइन कक्षा –

ऑनलाइन कक्षा के सफल और निर्बाध सचं ालन के लिए तीव्र गति वाला इंटरनेट आवश्यक है, साथ ही नई टेक्नोलॉजी वाले मोबाइल और कम्प्यूटर की भी आवश्यकता रहती है। शिक्षकों को विभिन्न तकनीकी ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जैसे – गूगल मीट, गूगल क्लासरूम, जीमेल, व्हाट्सअप, जूम इत्यादि का उपयोग करने के अनुक्रम के बारे में योजना बनानी होती है जो काफी समय खर्च करती है।

बच्चों की शिक्षा के प्रति उदासीनता –

ऑनलाइन कक्षा के दौरान शिक्षकों व विद्यार्थियों का आपस में सीधे सम्पर्क नहीं होने के कारण शिक्षक एक तरफ से ही अपना व्याख्यान देते रहते हैं। अन्य सभी को अपना उपकरण म्यूट मोड पर रखना होता है। इस तरीके से अधिक देर तक पढ़ने–पढ़ाने से बच्चों में पढ़ाई के प्रति अरूचि और उदासीनता उत्पन्न होने लगती है और कई बच्चे तो कक्षा के बीच में ही कक्षा छोड़ देते हैं।

मूल्यांकन में समस्या –

ऑनलाइन माध्यम में मूल्यांकन करना एक जटील कार्य हो गया है। फोने पर जांच का कार्य आसान नहीं है। इस स्थिति में विद्यार्थियों को छोटे असाइनमेंट और वर्कशीट का कार्य दिया जा सकता है परन्तु इसमें भी सुधार एवं मूल्यांकन करने में काफी परेशानी होती है। डर के अभाव में अनेक विद्यार्थी कार्य समय पर पूरा ही नहीं करते हैं। जिसका परिणाम उनके अधिगम पर पड़ता है।

6. ऑनलाईन शिक्षा की विशेषताएँ, उसके दुष्परिणाम एवं चुनौतियाँ –

ऑनलाईन शिक्षा की विशेषताएँ –

- इसमें विद्यार्थी व शिक्षक अपनी सुविधानुसार कहीं से भी कक्षा का सचांलन कर सकते हैं।
- यात्रा व समय की बचत होती है।
- विद्यार्थी ऑनलाइन कक्षा में दिए गए व्याख्यान को रिकॉर्ड कर सकते हैं जिसे पुनः देखा–सुना जा सकता है।
- ऑनलाइन अध्ययन करने वाले विद्यार्थी विभिन्न विशेषज्ञों से विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।
- 21वीं सदी में विद्यार्थियों के अनुशासन, पेशे या करियर में आवश्यक डिजिटल साक्षरता कौशल की मौजूदगी को सुनिश्चित करने के लिए ई–शिक्षा इंटरनेट और कम्प्यूटर कौशल का ज्ञान विकसित करती है।
- छोटे शहरों में जहाँ लडकियों को पढ़ने के लिए बाहर नहीं भेजा जाता, उनके लिए ई–शिक्षा किसी वरदान से कम नहीं है।
- भारत सरकार द्वारा शिक्षा के डिजिटल प्लेटफॉर्मों तक विद्यार्थियों की पहुंच बढ़ाने के लिए ई–शिक्षा का योगदान है।

ऑनलाईन शिक्षा के दुष्परिणाम –

- लगातार स्क्रीन देखने से बच्चों को दृष्टि संबंधी समस्याएँ बढ़ गई हैं। नज़र कमजोर होना, सिरदर्द, आँखों से पानी आना आदि समस्याएँ बढ़ने लगी है। बच्चो ं में कम उम्र में अवसाद, निराशा, दुश्चिं ता बढ़ने लगी है।
- बच्चों में आम दैनिक व्यवहार में बदलाव आने लगा है। जैसे – चिड़चिड़ापन, झुंझलाहट, जिद्द आदि।
- लगातार बैठे रहने के कारण बच्चों में शारीरिक गतिविधियां कम होने से मोटापे की समस्या अधिक देखने को मिलती है।
- सीधे सम्पर्क न होने के कारण शिक्षक–विद्यार्थियों के संबधं में असहजता की स्थिति उत्पन्न हो गई है।
- असंतोषजनक मूल्यांकन होने से विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में गिरावट हुई है।
- छोटे बच्चों के लिए माता–पिता या अभिभावकों के ध्यान दिए बिना ऑनलाइन शिक्षण सभंव नहीं है।
- एक स्थान पर कई घंटे अकेले बैठकर पढ़ने से बच्चों में शिक्षा के प्रति अरूचि व उदासीनता उत्पन्न होती है जिसके कारण उनमें कार्टून देखने,

गेम खेलने जैसी लत लग जाती है।

ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियां –

- ऑनलाइन शिक्षा की राह में आधी–अधूरी तैयारी व ऑनलाइन कोर्स उपलब्ध करना बड़ी चुनौती है।
- विद्यालय स्तर को विश्वविद्यालय स्तर तक ऑनलाइन शिक्षण के लिए आवश्यक ससांधनों की उपलब्धता नगण्य है।
- ऑनलाइन शिक्षण के लिए अध्यापकों को आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान करना एक चुनौती है।
- देश में केवल 24 प्रतिशत घरों में ही इटं रनेट की सुविधा उपलब्ध है। ऐसे में ग्रामीण व अन्य क्षेत्रों में ई–शिक्षा व्यवहारिक नहीं है।
- सभी अभिभावक अपने हर बच्चे को स्मार्टफोन या लैपटॉप दिलाने में असमर्थ हैं जिससे कई बच्चे संसाधनों के अभाव में ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते ।
- इटंरनेट की कनक्टेीविटी तथा अपर्याप्त डटेा प्लान के कारण भी ऑनलाइन शिक्षा में बाधा आती है।
- ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान अभिभावकों पर अतिरिक्त जिम्मेदारी आ जाती है कि वे बच्चों पर मॉनिटरिंग करें व उन्हें मदद करें।
- आत्म–अनुशासन या अभिभावकों के असहयोग की स्थिति में आनलाइन पढ़ाई में बच्चे पिछड़ सकते हैं।
- तकनीकी की कम समझ ऑनलाइन शिक्षा की एक बड़ी चुनौती है।
- अधिक समय तक बिजली की अनुपलब्धता भी एक चुनौती है।
- वर्चुअल कक्षा–कक्ष, लैब प्रेक्टिकल वर्क करना सभंव नहीं है।
- शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों द्वारा अध्यापकों के साथ व्हाट्सअप पर अनावश्यक बातें करना, अभद्र भाषा का प्रयोग जैसी स्थितियां भी देखने की मिलती हैं।

7. ऑनलाईन शिक्षा के लिए समाधान व सुझाव –

वर्तमान में उपलब्ध संसाधनों से ऑनलाइन शिक्षा को बहे तर बनाने के लिए नीतिगत स्तर पर सकारात्मक प्रयास किए जा रहे हैं। निःसदेंह अच्छी पहल है परन्तु प्रभावी परिणाम के लिए बेहतर तैयारी आवश्यक है। इसके लिए इस दिशा में कुछ कदम उठाए जा सकते हैं। जैसे –

- स्कूल से लकर विश्वविद्यालयों तक ऑनलाइन शिक्षण के लिए पर्याप्त ससांधनों की उपलब्धता और उनका प्रयोग सुनिश्चित किया जाना।
- सभी अध्यापकों को ऑनलाइन शिक्षण कराने का गहन प्रशिक्षण प्रदान करना जिससे अध्यापक कुशलतापर्वूक शिक्षण कार्य कर सकें ।
- ऑनलाइन शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम का निर्माण, तद्नुरूप पाठ्य सामग्री तैयार करना।
- शिक्षकों द्वारा अपने व्याख्यान को छोटे और मजेदार कार्यक्रम की तरह प्रस्तुत करना जिसे बच्चे आसानी से समझ सकें।
- जिन गरीब विद्यार्थियों के पास शैक्षिक ससांधनों की कमी है, उनके लिए एज्युकेशनल किट की व्यवस्था करना।
- अभिभावकों को भी बच्चों की गतिविधियों के प्रति सजग रहना होगा।

8. ऑनलाइन शिक्षा का भविष्य –

कोविड–19 सकंट ने मानव जीवन के अन्य पक्षों के साथ–साथ शिक्षा में भी आवश्यकतानुसार सशोधन करने के लिए विचार करने के लिए बाध्य किया है। इसे ध्यान में रखते हुए ऑनलाइन शिक्षा पर पूरे देश में मंथन प्रारंभ हो गया है।

ऑनलाइन पढ़ाकर बच्चों को बौद्धिक रूप से सक्रिय नहीं बनाया जा सकता है, उनके लिए विद्यालय अनिवार्य है। विद्यालय में बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है। कोराना सकंट के दौरान वैकल्पिक तौर पर ऑनलाइन शिक्षा अवश्य ही एक जरूरत है लेकिन सामान्य दिनों में परम्परागत कक्षीय शिक्षा ही आवश्यक है। ऑनलाइन शिक्षा कक्षा–कक्ष शिक्षण के सहायक के रूप में ही सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध होगी।

9. उपसंहार –

वर्तमान परिस्थितियों ने ऑनलाइन शिक्षा को ज्ञान प्राप्ति का माध्यम बना दिया है। यह नवोन्मेषी, समय, ससांधन, धन की बचत करने वाला माध्यम है। किताबों को डिजिटलाइज किया जा रहा है। वबे साइट, वीडियो, ऑडियो आदि माध्यमों स विषय वस्तु का डिजिटलीकरण करके सभी बच्चों तक शिक्षा की पहुचं सुनिश्चित की जा रही है। लेकिन शिक्षा से जुड़ी सभी इकाईयों के पास उपयुक्त ससांधनों की अनुपलब्धता के कारण तकनीकी क्षेत्रों में आज भी हम पिछड़े हुए हैं। ई–कक्षा के सहज सचं ालन के तरीके भारत जैसे देश मे सभंव नहीं है।

REFERENCES

1. इलक्ट्रॉनिक शिक्षा – विशेषताएँ और चुनौतियां www/drishtiias.com/hindi/daily-news-editorials/limitations of online learning
2. जॉन माया (2020) – ऑनलाइन शिक्षण में बहे तर भविष्य; जनसत्ता, लखनऊ
3. कुमार निरंजन (2020) – ऑनलाइन शिक्षा और चुनौतियां; दैनिक जागरण, प्रयागराज।
4. द हिन्दु मैंगजीन (9 अगस्त 2020) – एज्युकेशन क्राइसिस; संयुक्त राष्ट्रसघं, लखनउ, पृ.सं. 1
5. वाडिया, लीना चन्द्रन (2020) – कोविड–19 के दौर में ऑनलाइन शिक्षा की जरूरत

https://www.orfoline.org/hindi/research/the need and challanges of online education in Covid-19 era.